समकालीन युग में शिक्षा की समस्या – एक दार्शनिक अध्ययन

डॉ0 अरूण कुमार सिंह

वर्तमान शिक्षा–प्रणाली अन्तर्राष्ट्रीयता और विश्व–बन्धुत्व की धारणा का प्रसार नहीं करती। वह मस्तिष्क को उन्मुक्त नहीं करती, न आत्म–साक्षात्कार के लिए ले जाती है। राधाकृष्णन् के शब्दों में – ''हमारी शिक्षा ने हमें बौद्धिक बन्धनों से स्वतंत्र नहीं किया है। वह मस्तिष्क को उत्तेजित तो करती है परन्तु तृप्त नहीं करती। हम कविता पढ़ते हैं, चलचित्र देखते हैं तथा उपन्यास पढ़ते हैं और समझ लेते हैं कि हम सुसंस्कृत हैं। हमारा विवेक केवल दिखावा है।'' आज डाक्टर की दृष्टि रोगी की निरोगता की तरफ नहीं अपितु रूपयों की तरफ है कि अब यह जाल में फंस गया, इससे अधिक–से–अधिक रूपये कैसे ऐंठे जायें। पहले वैद्य लोग रोग की नब्ज देखकर अपनी बुद्धि लगाते थे पर अब डाक्टर सीधे तरह–तरह की मशीनी जांच लिख देते हैं, क्योंकि उन्हें प्रत्येक जांच में कमीशन मिलता है। स्कूल–कालेजों में भी घूस (डोनेशन) देकर दाखिला मिलता है। अध्यापक स्कूलों में भलीभांति नहीं पढ़ाते, जिससे विद्यार्थी ट्यूशन लगाने के लिए मजबूर हो जाता है। कोई किसी की सहायता, सेवा या उपकार भी करता है तो उसकी दृष्टि पैसा कमाने के तरफ रहती है। बिना पैसे के कोई किसी के लिए कुछ नहीं करना चाहता। समकालीन युग में शिक्षा रोजगार–परक तो है, लेकिन मूल्य परक नहीं रह गई है।